विचार बिन्दु

अधर्म की सेना का सेनापति झूठ है। जहाँ झूठ पहुँच जाता है वहाँ अधर्म-राज्य की विजय-दुंदुभी अवश्य बजती है। –सुदर्शन

'अग्नि-पथ, युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़'

भारत सरकार ने 'अग्नि पथ' नामक योजना घोषित की है, जिसे सरकार रोजगार देने वाली बहुत बड़ी योजना के रूप में प्रचारित कर रही है। इसके बारे में देश के सभी समाचार पत्रों में पूरे पृष्ठ के विज्ञापन प्रकाशित किए गए हैं। सरकार का यह दावा है कि इस योजना के माध्यम से 17.5 वर्ष से 21 वर्ष की आयु के लगभग 50000 युवाओं की भर्ती भारतीय सेना के तीनों अंगों में प्रति वर्ष की जाएगी। यह नियुक्ति चार वर्ष के लिए होगी। इस अवधि के बाद भर्ती किए लोगों में से 25 प्रतिशत को नियमित किया जाएगा और शेष को निकाल दिया जाएगा। ये सब 22 से 25 साल की आयु में ही 'भूतपूर्व' की श्रेणी में सम्मिलित हो जाएंगे। निकाले गए 75 प्रतिशत लोगों को अन्य सेवाओं में प्राथमिकता देने की बात की जा रही है। यह उल्लेखनीय है कि इन्हें किसी प्रकार की नौकरी की कोई गारंटी नहीं दी गई है। सरकार इस कदम को एक मास्टर- स्ट्रोक की तरह प्रचारित कर रही है और इसे बेरोजगारी दूर करने के साथ ही, सेनाओं की औसत आयु कम करके, उसे अधिक ऊर्जावान और आधुनिक बनाने का निर्णय भी बता रही है।

प्रधानमंत्री जी ने इस अग्निपथ योजना की घोषणा के साथ ही, अगले डेढ़ वर्ष में 10 लाख रिक्त सरकारी पदों को भरने की घोषणा भी की है। यह घोषणा की गई है कि सभी विभागों के रिक्त पद, अगले डेढ़ साल में भर दिए जाएंगे।

हम इस आलेख में यह समझने का प्रयास करेंगे कि सेना में भर्ती की नई योजना अग्नि पथ का युवाओं के लिए क्या तात्पर्य है एवं इसका उनके भविष्य पर क्या प्रभाव होगा?

यह उल्लेखनीय है कि सेना में दो-तीन साल से कोई भर्ती नहीं हुई है तथा वर्तमान में लगभग 1.25 लाख पद रिक्त पड़े हैं जिन पर भर्ती की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई थी। कई युवाओं ने लिखित परीक्षा तथा शारीरिक क्षमता की परीक्षा भी दे दी थी। अब नई योजना की घोषणा के साथ उस पूरी प्रक्रिया को रोक दिया गया है। इसके कारण, कई ऐसे युवक जो 2-3 साल से तैयारी कर रहे थे, वे अधिकतम आयु सीमा 21 साल से अधिक होने के कारण अग्निपथ योजना के अंतर्गत भर्ती हेतु अयोग्य हो जाएंगे। पहले वाली भर्ती, नियमित भर्ती थी, जिसमें पेंशन, ग्रेच्युटी आदि का लाभ मिलता एवं नौकरी लंबे समय के लिए थी। नई योजना के अंतर्गत अग्नि वीरों की कुल नौकरी चार साल की होगी, जिसमें से 6 माह प्रशिक्षण होगा। चार साल पश्चात, उन्हें निकाल दिया जाएगा और वे पुन: बेरोजगार हो जाएंगे। उन्हें न पेंशन मिलेगी, न ग्रेच्युटी और न कोई अन्य लाभ। उन्हें केवल उनके वेतन 30000 रुपये प्रतिमाह में से काटी गई 9000 रुपये प्रतिमाह एवं इतनी ही सरकार द्वारा मिलाकर, चार साल बाद, ब्याज समेत कुल 11.70 लाख रुपये मिलेंगे।

सरकार ने कहा है कि जो 75 प्रतिशत लोग सेना से निकाले जाएंगे, उन्हें अन्य अर्ध सैनिक बलों में होने वाली भर्ती में प्राथमिकता दी जाएगी। पूर्व अनुभव के अनुसार इस प्रकार के आश्वासन केवल लॉलीपॉप ही सिद्ध होते हैं। इनमें नियमित नौकरी की गारंटी के अभाव में भूतपूर्व अग्निवीर के रूप में ये युवा पुन: बेरोजगारों की फौज में सम्मिलित होकर मानसिक अवसाद में चले जाएंगे। अच्छा तो यह होता कि सरकार इन्हे सेवा से मुक्त होते ही अन्य किसी सेवा में समायोजित कर लेती। ऐसा कोई प्रावधान इस योजना में नहीं है। क्योंकि चार साल तक ये लोग अन्य किसी नौकरी में न आवेदन कर पाएंगे और न ही चयनित हो पाएंगे, एक प्रकार से ये रोजगार के अन्य अवसरों से इस अवधि में वंचित हो जाएंगे।

सेना में सदैव गोरखा रेजिमेंट, राजपूत रेजिमेंट, जाट रेजिमेंट आदि में भर्तियां होती रही हैं और प्रत्येक के मन में अपनी रेजिमेंट का नाम ऊंचा रखने की भावना कूट-कूट कर भरी जाती रही है। अब इस व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया है। कई पूर्व सैनिक अधिकारियों के अनुसार, इसका सैनिकों के मनोबल पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। जिस व्यवस्था को बनाने और मजबूत करने में कई साल लगे, उसे एक निर्णय लेकर सरकार द्वारा ध्वस्त किया जा रहा है।

इस योजना का एक और दूरगामी दुष्प्रभाव समाज पर होने की आशंका है। चार साल बाद प्रति वर्ष 30-35 हजार पूर्ण प्रशिक्षित युवा जब बेरोजगार होकर समाज में लौटेंगे तो उनकी मनःस्थिति क्या होगी? ये लोग सभी प्रकार के आधुनिकतम हथियार चलाने में पारंगत होंगे।

इस योजना से तो ऐसा लगता है कि भारतीय सेना में अब सैनिक ठेके पर रखे जाएंगे। ठेके पर रखे गए सैनिकों में वह निष्ठा और समर्पण की भावना कैसे आएगी? सरकारों ने अपने कई विभागों में तो ठेका प्रथा कई सालों से चला ही रखी है, अब उसका विस्तार सेना तक में कर दिया है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। कुछ समय पूर्व, इसी भारत सरकार ने 'वन रैंक, वन पेंशन' लागू कर वाह-वाही लूटने का काम किया था। नई योजना में उसका क्या हश्र होगा? सरकार ने शायद उससे बचने के लिए ही अग्निपथ योजना बनाई है ताकि 'न रहे बांस, न बजे बांसुरी' की तर्ज पर 'न रहे नियमित नौकरी, न रहे पेंशन' की स्थिति उत्पन्न होने के कारण पेंशन ही नहीं रहेगी तो पेंशन में समानता की बात स्वत: समाप्त हो जाएगी।

सरकार ने शायद यह अनुमान नहीं लगाया होगा कि 'अग्नि पथ' योजना के कारण वह कितने 'अग्नि वीरों' की अग्नि परीक्षा लेने की तैयारी कर रही है? सरकार को शायद यह भी भान नहीं है कि चार वर्ष बाद ये अग्नि वीर नौकरी में तो नहीं रहेंगे किन्तु इनके दिलों में बेरोजगारी के कारण क्रोध से धधकती 'अग्नि' अपनी ज्वाला में क्या-क्या नहीं जला देगी?

देश का युवा, बेरोजगार अवश्य है, किंतु बेवक़ूफ़ नहीं है। वह समझदार है। इसी समझदारी का ही परिणाम है कि सरकार की आशा के विपरीत, उन्होंने इस योजना के विरुद्ध पूरे देश में मोर्चा खोल दिया है और प्रदर्शन प्रारंभ कर दिए हैं। बेरोज़गारी के बढ़ते स्तर से वह पहले ही बहुत कुंठित और आक्रोशित था। अब इस योजना की घोषणा ने, उसकी रही-सही आशा पर भी तुषारापात कर दिया है।

वह यह समझ गया है कि जो नियमित पद रिक्त थे और जिन पर नियमित भर्ती की प्रक्रिया चल रही थी, उसे ही रोककर, उनके विरुद्ध 'अग्नि वीरों' के नाम से ठेके पर चार साल के लिए भर्ती की जाएगी। जो व्यक्ति प्रतिदिन अपने भविष्य के प्रति आशंकित होगा, वह भला किस प्रकार पूर्ण उत्साह, निष्ठा और समर्पण की भावना स्वयं में ला पाएगा?

केंद्र सरकार इस योजना के माध्यम से अपना खर्चा भले ही कम कर ले, क्योंकि उसे सेवा संबंधी कोई लाभ जैसे पेंशन, ग्रेच्युटी आदि नहीं देने होंगे, ऐसा करके वे सेना को कमजोर करने का ही काम करेगी। विडंबना है कि इस योजना के विरुद्ध, कुछ अपवादों को छोड़कर, पूर्व सेनाध्यक्ष भी कुछ नहीं बोल रहे हैं। आश्चर्य तो तब हुआ जब केंद्रीय मंत्री जनरल वी के सिंह ने इस योजना के बारे में पूछे जाने पर अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। स्पष्ट है, मंत्री मंडल में सम्मिलित पूर्व सेनाध्यक्ष को भी ऐसा दूरगामी निर्णय लेते समय विश्वास में नहीं लिया गया।

इस योजना का एक और दूरगामी दुष्प्रभाव समाज पर होने की आशंका है। चार साल बाद प्रति वर्ष 30-35 हजार पूर्ण प्रशिक्षित युवा जब बेरोजगार होकर समाज में लौटेंगे तो उनकी मन:स्थिति क्या होगी? ये लोग सभी प्रकार के आधुनिकतम हथियार चलाने में पारंगत होंगे। इनका उपयोग राष्ट्रिवरोधी गतिविधियों में कोई संगठन कर ले, इस संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता।

वास्तव में यदि ऐसा हो गया और इनका दुरुपयोग राष्ट्र विरोधी या असामाजिक गतिविधियों में होने लग गया, तो समाज में कानून व्यवस्था की स्थिति पर भी विपरीत असर पड़ेगा।

उपरोक्त वर्णित सभी पहलुओं को दृष्टिगत रखते हुए, सरकार को यह चाहिए कि वह इस योजना पर पुनर्विचार करे तथा इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाए।

युवाओं के आंदोलन की बढ़ती उग्रता को देखते हुए सरकार ने कुछ संशोधन अवश्य किए हैं, जैसे अधिकतम आयु सीमा में दो साल की वृद्धि, अर्ध सैनिक बलों और असम राइफल्स में भर्ती में अग्नि वीरों के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण आदि। कई राज्य सरकारें भी सेना से निकाले गए अग्नि वीरों को पुलिस भर्ती में प्राथमिकता के आश्वासन दे रही हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि सरकार ने दो वर्ष के मंथन में भी युवाओं की समस्याओं का अनुमान नहीं लगाया।

कुल मिलाकर सरकार प्रतिदिन कोई न कोई नया आश्वासन देकर युवाओं के आक्रोश को कम करने का प्रयास अवश्य कर रही है, किन्तु ये सारे प्रयास सतही हैं और इनसे युवा की भविष्य के प्रति अनिश्चितता कम नहीं होती। इसकी संभावना कम ही है कि युवा इनसे संतुष्ट होंगे। यदि सरकार वास्तव में सेना से निकाले गए अग्नि वीरों के बारे में गम्भीर है तो उन्हें चार साल बाद न्यूनतम 30000 रुपए प्रतिमाह की नौकरी की गारंटी देनी चाहिए क्योंकि उसका प्रारंभिक वेतन ही अभी 39000 रुपये प्रतिमाह है।

यदि सरकार ने इस पर सम्वेदनशीलता नहीं दिखाई और इसे वर्तमान स्वरुप में ही लागू करने पर अड़ी रही तो यह न केवल देश के युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ होगा, अपितु इससे राष्ट्र की सुरक्षा पर भी विपरीत प्रभाव होगा। देशवासी तो सरकार के नीति निर्धारकों को सद्बुद्धि देने हेतु ईश्वर से प्रार्थना ही कर सकता है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

(21 जून - विश्व संगीत दिवस विशेष)

विश्व में शांति, भाईचारे एवं सद्भाव के लिए विश्व संगीत दिवस का आयोजन

पन्नालाल मेघवाल

■ म्यूजिक डे का मकसद विशेषज्ञों एवं नए कलाकारों को एक मंच पर लाना है

विश्व संगीत दिवस को वर्ल्ड म्यूजिक डे एवं फेटे डी ला म्यूजिक' के नाम से जाना जाता है। इसका अर्थ म्यूजिक फेस्टिवल है। 21 जून 1982 को म्यूजिक फेस्टिवल की शुरुआत फ्रांस के पूर्व संस्कृति मंत्री जेक लेंग ने की। उन्होंने शांति, भाईचारा एवं सद्भाव के लिए म्यूजिक फेस्टिवल का आयोजन किया। इसको मनाने का उद्देश्य अलग-अलग तरीक़े से संगीत का प्रचार करना, विशेषज्ञों एवं नए कलाकारों को एक मंच पर लाना है।

संगीत सिर्फ सात सुरों में बंधा नहीं होता है इसे बांधने के लिए विश्व की सीमाएं भी कम पड़ जाती हैं। यह दु:खी से दु:खी इंसान को भी खुश कर देता है। संगीत दुनिया में हर जगह है, अगर इसे महसूस करें तो दैनिक जीवन में संगीत ही संगीत भरा है। कोयल की कूक, पानी की कलकल, हवा की सरसराहट हर जगह संगीत ही तो है, बस इसे महसूस करने की जरूरत है।

संगीत न सरहदों में कैद होता है और ना भाषा में बंधता है। भले ही हर देश की भाषा पहनावा एवं खानपान अलग-अलग हो लेकिन हर देश के संगीत में सभी सात स्वर एक जैसे होते हैं। और लय-ताल भी एक सी होती है। संगीत हर इंसान के लिए अलग-अलग मायने रखता है। किसी के लिए संगीत का मतलब अपने दिल को शांति देना है तो कोई अपनी खुशी का संगीत के द्वारा इजहार करता है। प्रेमियों के लिए तो संगीत किसी रामबाण या ब्रह्मास्त्र से कम नहीं है।

भारत में विश्व संगीत दिवस पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। भारत में संगीत गायन की- शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोकगीत तीन श्रेणियां मानी गई हैं। शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद, ख्याल एवं तराना तीन विधाएं हैं। सुगम संगीत में ठुमरी, टप्पा, गजल, भजन, दादरा, अष्टपदी एवं धमार सात विधाएं हैं। लोक संगीत में कजरी, झूला, हिंडोला, आल्हा, बिरहा, बारहमासा एवं संस्कार गीत सात विधाएं हैं।

ध्रुपद गायन भारत की प्रसिद्ध गायन शैली है। अधिकांश विद्वानों का मत है कि पन्द्रहवी शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने इसकी रचना की थी। ध्रुपद गायन तनाव व दौड़-धूप भरी जिंदगी से शांति प्रदान करता है। तानसेन, स्वामी हरिदास, बैजू बावरा, उस्ताद जियाउद्दीन डागर आदि प्रमुख ध्रुपद गायक रहे हैं।

संगीत अवार्ड से सम्मानित पंडित विश्व मोहन भट्ट ने संगीत का परिमार्जन करते हुए गिटार से सितार, सरोद और वीणा के चौदह अतिरिक्त तारों का सटीक और अद्भुत समन्वय कर विश्व को मोहन वीणा का अपूर्व उपहार दिया। मरू प्रदेश के लंगा कलाकारों ने आज विश्व भर में अपनी गायकी की छाप छोड़ी है। अपनी गायन परंपरा को निभाने वाले लंगा लोक वाद्य खड़ताल, सारंगी, अलगोजा, सुरन्दा, ढोलक, सुरनाई, मोरचंग और पूंगी आदि स्वरों का सहज उतार-चढ़ाव और ताल गूढ़ का समन्वय कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। मांगणियार लोक कलाकार वंश परंपरा से लोकगीतों, लोक वाद्यों और लोक संगीत के मौलिक स्वरूप को संजोए हुए हैं।

स्वर्गीय गवरी देवी राजस्थान की मांड गायिका की उस हस्ती का नाम है जिन्होंने अपने स्वर माधुर्य से न केवल लोक गायिकी शैली को समृद्ध किया बल्कि देश की सीमाओं को लांघ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा कर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। मेवाड़ धरा की माटी में जन्मी स्वर्गीय मांगी बाई भी ऐसी ही लोक गायिका थीं जिन्होंने खटके व मुर्कियों का सहज प्रयोग कर मांड गायन को एक नई ताजगी प्रदान की। मेवाड़ क्षेत्र में कहीं केसरिया बालम आवो नी पधारो म्हारे देश स्वर गूंजते हैं तो स्वर्गीय मांगीबाई की स्मृति दिलो-दिमाग में तरोताजा हो जाती है।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं
स्वतंत्र पत्रकार

मारवाड़ में प्री-मानसून की बारिश का इंतजार

जोधपुर, (कासं)। दक्षिण पश्चिमी मानसून तय समय पर आगे बढ़ रहा है। इसके राजस्थान में संभवत: 25 जून तक पहुंचने की संभावना है। प्रदेश के कई हिस्सों में पिछले तीन चार दिनों में प्री- मानसून की बारिश हो रही है मगर मारवाड़ में अच्छी बारिश या प्री मानसून की बारिश अब तक नहीं हुई है। जोधपुर शहर में एक बार हल्की बूंदाबांदी हुई थी। रविवार को ग्रामीण इलाकों में धूल भरी आंधियां चली व कहीं -कहीं पर छींटे भी गिरे थे।

उमस के बीच लोगों को बारिश की आस बनी है। मगर दोपहर तक कहीं से बारिश के समाचार नहीं मिल पाए। मौसम विभाग ने आगामी दो तीन दिन तक प्रदेश के कई जिलों में जिनमें बीकानेर , अजमेर, जोधपुर सहित कई दूसरे जिलों में प्री मानसून की बारिश के आसार व्यक्त किए है।

लाखोटिया तालाब में मछलियां मरीं

शायद ऑक्सीजन की कमी होने से मरी मछलियां

पाली, (नि.सं.)। पाली शहर के लाखोटिया तालाब में भैंरूघाट साइड तालाब के दूसरे हिस्से में भरे पानी में सोमवार सुबह घूमने जाने वाले लोगों को सैकड़ों मछलियां किनारे पर मरी पड़ी मिली, जिसके कारण आने -जाने वाले राहगीरों को भारी दुर्गंध आ रही थी। यह मछलियां किस कारण मरी उसका पता नहीं चला। पिछले 2 वर्षों से तलाब में भरा पानी गंदा हो गया है ऑक्सीजन की कमी होने से शायद मरी है। कई लोगों का कहना है कि लोगों ने तालाब में कुछ डाल दिया हो कारण नहीं पता चला। सूचना देने पर दिन में नगर परिषद के कर्मचारी पहुंचे और तालाब में मरी मछलियों को बाहर निकाला और जांच के लिए भेजा। मत्स्य विभाग या चिकित्सा विभाग इसकी जांच कर पता लगाएंगे कि क्या मामला है।

पाली नगर परिषद के कर्मचारियों ने मृत मछलियों को बाहर निकाला।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस: स्वास्थ्य के एक नए प्रतिमान की ओर अग्रसर दुनिया

■ निरोग रहने के लिए बड़ी संख्या में महिलाएं योग की ओर रुख कर रही हैं

पिछले सात वर्षों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन, जो अब दुनिया भर में अब तक का सबसे बड़ा कार्यक्रम बन गया है, ने योग को एक सॉफ्ट पावर के रूप में स्थापित किया है।

भारत इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को और अधिक उत्साह, भव्यता तथा दुनिया भर के लोगों, राष्ट्रों एवं राष्ट्रीयताओं की व्यापक भागीदारी के साथ मनाया जाएगा। प्राचीन विरासत वाला शहर या महलों का शहर-मैसूर, माननीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सामान्य योग प्रोटोकॉल (सीवाईपी) के प्रदर्शन का गवाह बनेगा। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की एक अनूठी विशेषता गार्जियन रिंग या दुनिया भर में उगते सूरज के साथ सामान्य योग प्रोटोकॉल (सीवाईपी) का प्रदर्शन है, जिसकी शुरुआत जापान से होगी और अलग-अलग देशों में सूर्योदय के साथ योगाभ्यास का प्रदर्शन किया जाएगा।

देश भर में 75 ऐतिहासिक स्थानों पर योगाभ्यास का आयोजन किया जाएगा और यह बाकी दुनिया के लिए एक प्रदर्शन होगा। बढ़ती हुई वैश्विक स्वीकृति ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को स्वास्थ्य एवं कल्याण से जुड़ा एक ऐसा जन आंदोलन बना दिया है जो भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है और दुनिया को स्वास्थ्य एवं कल्याण के एक नए, व्यापक रूप से परिभाषित एवं अन्वेषित अभ्यास को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

योग की बहुआयामी उपलब्धियों और उसके एक सॉफ्ट पावर बनने की यात्रा 2014 में शुरू हुई जब माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया। भारत के इस प्रस्ताव का 175 देशों ने समर्थन किया। इसके परिणामस्वरूप 21 जून 2015 को पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।

1 दिसंबर 2016 को यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल होकर भारत द्वारा संजोयी गई इस सांस्कृतिक विरासत ने सार्वभौमिक स्वीकृति के एक और मील के पत्थर को पार कर लिया।

योग वाकई एक जन आंदोलन का स्वरूप ले रहा है। विश्व में योग की पहुंच बढ़ती देखी गई है। वर्तमान में 192 देशों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है, जो कि इसे वैश्विक कल्याण का अब तक का सबसे बड़ा आयोजन बनाता है। इसके अलावा, विदेशों में भारतीय मिशन और पोस्ट के माध्यम से 170 से अधिक देशों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के दौरान दो गिनीज विश्व कीर्तिमान बनाए गए- सबसे अधिक संख्या में भाग लेने वाली राष्ट्रीयताएं (84 राष्ट्र) और एक ही स्थान पर एवं एक ही कार्यक्रम में सबसे अधिक भागीदारी (35,985 लोग)। 14 जनवरी 2022 को मकर संक्रांति के अवसर पर दुनिया भर में एक अरब से अधिक लोगों ने सूर्य नमस्कार किया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2021 के दौरान लगभग 15 करोड़ लोगों ने इसमें भाग लिया और इस वर्ष इस संख्या का बढ़ना निश्चित है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने योग के प्रचार एवं विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए दो पुरस्कारों (एक अंतरराष्ट्रीय और दूसरा राष्ट्रीय) की घोषणा की। योगासन को प्रतिस्पर्धी खेल भी घोषित किया गया है। इस कदम ने योग की प्राचीन परिपाटी को और आगे प्रोत्साहित किया है तथा इसके लाभों के बारे में जागरूकता फैलाई है।

इस प्राचीन परंपरा के आधुनिक लाभों को जानने के लिए, सेंट्रल काउंसिल फॉर रिसर्च इन योग एंड नेचुरोपैथी (सीसीआरवाईएन) ने 0.79 से 13.03 तक के प्रभाव कारक के साथ पब्मेड इंडेक्स जर्नल में 113 शोध प्रकाशित किए हैं।

2014 से पहले और 2015 के बाद योग से संबंधित नैदानिक परीक्षणों की संख्या में लगभग 6 गुना वृद्धि हुई है और शोध के औसत वार्षिक प्रकाशन में लगभग 11 गुना वृद्धि हुई है।

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (एमडीएनआईवाई) ने सामान्य योग प्रोटोकॉल विकसित किया यही प्रोटोकॉल वास्तव में प्रत्येक वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के दौरान किए जाने वाले प्रदर्शन के आधार हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की खूबियों को प्रौद्योगिकी के साथ जोड़कर योग की पहुंच को और अधिक मजबूत किया गया है। इसमें नमस्ते योग, वाई-ब्रेक, डब्ल्यूएचओ एम योग जैसे मोबाइल आधारित एप्लिकेशन शामिल हैं। पांच मिनट के योग प्रोटोकॉल को वाई-ब्रेक एप्लिकेशन में शामिल किया गया है और इसे काम करने वाले पेशेवरों के लिए विशेष रूप से कार्यस्थलों पर होने वाले तनाव को दूर करने, तरोताजा होने और अपने काम पर फिर से ध्यान केंद्रित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

भारत में अब योग आधारित पर्यटन बढ़ रहा है और ऋषिकेश, बेंगलुरु तथा मैसूर आदि जैसे भारत के शहरों को अब दुनिया के योग के केन्द्र के रूप में जाना जाता है। इससे चिकित्सीय महत्व वाली यात्रा से जुड़े लाभों को कई गुना बढ़ाने के अवसर में बढ़ोतरी हुई है। योग पुराने दर्द, मनोवैज्ञानिक समस्याओं, मनोदशा संबंधी विकारों और कैंसर, मधुमेह एवं हृदय रोगों जैसी पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रबंधन में अत्यधिक फायदेमंद है।

भारत के पहले योग विश्वविद्यालय, लकुलिश योग विश्वविद्यालय में नामांकन कराने वालों की संख्या में तीन गुना वृद्धि देखी गई है। सामान्य योग प्रोटोकॉल के बारे में 1000 से अधिक विश्वविद्यालयों, 30,000 कॉलेजों और सीबीएसई से संबद्ध 24000 स्कूलों को अवगत कराया गया है। लगभग 1.25 लाख स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों (एचडब्ल्यूसीए) को समग्र स्वास्थ्य के संबंध में शिक्षा प्रदान करने का दायित्व सौंपा गया है। धीरे-धीरे लेकिन निरंतर तरीके से योग आज करियर के एक बेहतरीन विकल्प के रूप में उभर रहा है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की एक और उल्लेखनीय उपलब्धि जीवन के सभी क्षेत्रों और वर्ग से जुड़े लोगों को योग के दायरे में शामिल करना है। पिछले अंतरराष्ट्रीय योग दिवसों के दौरान कई दिव्यांग लोगों को योग करते देखा गया। स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए बड़ी संख्या में महिलाएं योग की ओर रुख कर रही हैं।

सर्बानंद सोनोवाल

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 21 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र बुधवार प्रात: 5:03 तक, आयुष्मान योग प्रात: 6:40 तक, बालव करण प्रात: 8:46 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से बुधवार प्रात: 5:03 तक है। सायन कर्क में सूर्य प्रवेश दिन 2:44 से करेगा। सूर्य दक्षिणायन आरम्भ होगा। वर्षा ऋतु आरम्भ होगी। आज कालाष्टमी, बोहरा अष्टमी, पंचक और अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:03 से 10:46 तक, लाभ-अमृत 10:46 से 2:40 तक, शुभ 3:54 से 5:37 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19

मेष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है और पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यक्तिगत परेशानी अभी बनी रहेगी।

वृष

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों का विस्तार होगा।

मिथुन

व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्य में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों से सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अस्त-व्यस्त व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें अभी बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। अनावश्यक वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

धनु

परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

मकर

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित योजना बनेगी।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।